Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

10 - 8 - 2014
राखी पोर्णिमा

गुप्तता

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

हमारे शास्त्रो मे कहा गया है, की आप "दान" ऐसा करो की दाये हाथ से किया गया दान बाये हाथ को भी पता न चले और ऐसा कहने का उद्देश क्या है। की हमारे दान की "गुप्तता" बनी रहे याने दान से भी अधीक "गुप्तता" को महत्व दिया गया है, इसमे "दान" का संमन्ध शरीर के साथ है, क्योकी "दान" शरीर के द्वारा कीया जाता है, और "गुप्तता" का संमन्ध आत्मा के आनंद के साथ है, क्योकी गुप्तता से आत्मा को अच्छा लगता है, याने गुप्तता के साथ किया गया दान किया तो शरीर से जाता है, पर इसका "आनंद" आत्मा को प्राप्त होता है, इसी कारण गुप्तदान को सबसे अधीक महत्व दिया गया है,

"गुप्तदान" एक ऐसा कर्म है, जो आत्मा को आनंद देता है, और आत्मा को जितना आनंद प्राप्त होगा आत्मा उतनी ही संशक्त होगी पवित्र होगी शुद्ध होगी।

ठिक ऐसा ही "गुरुकार्य" का भी है, "गुरुकार्य" वह कार्य है, जो हम अपने आत्मा के आनंद के लिये करते है, गुरुकार्य को भी गुप्तदान की तरह गुप्तता रखना आवश्यक है, मान लो की हमे हमारे पुर्व जन्म के पुण्यकर्मो के कारण कोई भी गुरुकार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ तो उसे जितनी गुप्तता के साथ करोगे उतना ही अधीक आप को आत्मानंद प्राप्त होगा इसमे गुरुकार्य का संमन्ध शरीर के साथ है, क्योकी गुरुकार्य शरीर के द्वारा किया जाता है, लेकीन गुप्तता का संमन्ध "आत्मा के आनंद" के साथ होता है, अब आप अपने आप को ही प्रश्न करो की की मैने कितना दान गुप्तता के साथ दिया था कितना गुरुकार्य गुप्तता के साथ किया।

तो आपके समझ मे आयेगा। यहाँ दान का महत्व नही है, गुप्तता का महत्व है, यहाँ गुरुकार्य का महत्व नही गुरुकार्य की गुप्तता का महत्व है। दान बीना गुप्तता से करने पर वह "अंहकार" मे ही वृद्धी करता है, और "अंहकार" शरीर का दोष है, ठीक इसी प्रकार गुरुकार्य की गुप्तता न रखने पर हमारे उपर हजारो लोगो का चिंत आता है, और इससे हमारी स्थिती खराब हो जाती है, यह समझ लो चिंत सदैव ही खराब ही होता है, क्यो जो चिंत डालने वाले है, वे सामान्य मनुष्य ही होते है, तो उनमे तो "ईर्षा" का भाव होगा ही की इसे गुरुकार्य का अवसर मीला लेकीन मुझे नही मीला यह ईर्षा के भाव वाला चिंत होगा और इसका परीणाम होगा आपको आगे गुरुकार्य का अवसर नही मिलेगा। थोडा अब गुरुकार्य का भी समझ लो गुरुकार्य का अवसर भी हमे हमारे पुर्व जन्म के पुण्य कर्म के कारण मिलता है, लेकीन यह बात सामान्य मनुष्य के समझ मे ही नही आती है।

इस लिये सदैव गुरुकार्य गुप्तता के साथ करो तो ही आगे भी अवसर मिलेगा और आत्मा का आनंद भी प्राप्त होगा।

जैसा गुप्तदान है, वैसा ही गुरुकार्य है, और जैसा गुरुकार्य है वैसा ही गुरुसानीध्य भी है, आप को जो गुरु सानीध्य कभी भी मीलता है, तो वह भी आपके पुर्वजन्म के पुण्य कर्मो के कारण ही मील पाता है, उस गुरुसानीध्य का उपयोग आत्म आनंद प्राप्त करने के लीये करो उसका बिघोरा पिट कर अपना अंहकार बढाने के लीये मत करो अन्यथा वह "गुरु सानीध्य" का दुरुपयोग होगा। जैसा का वैसा ही "गुरु सेवा" का भी है, "गुरुसेवा" का अवसर भी हमे हमारे आत्मा के आनंद को प्राप्त करने के लिये करना चाहिये। इस प्रकार यह समझ लो की- गुप्तदान, गुरुकार्य, गुरुसानीध्य, गुरुसेवा सभी वह कार्य है, जो केवल और केवल आत्मा के आनंद के लिये ही कीये जाने चाहिये अन्यथा उनका लाभ कम नुकसान ही जादा होता है, यह मेरा अनुभव है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

यह सब बाते इसबार स्पष्ट इसलीये कर रहा हु। क्योंकी इन सबका लाभ आप के आध्यात्मीक प्रगती मे हो यह मेरी इच्छा है,
आप यह सब करते हो लेकीन गुलता नही रखते इसी लीये यह सब करके के भी जो आपकी आत्मा की प्रगती होना चाहिये वह नही हो पा रही है, और आपके प्रगती क्यो नही हो पा रही है, इस पर मेरा संशोधन चल रहा है, क्योंकी मेरे जिवन का उद्देश ही आपकी आध्यात्मीक प्रगती कराना है, चलो जब जागो तभी सबेरा आज हम "राखी पोर्णिमा" के शुभ अवसर पर यह संकल्प करे की गुलता को हम जिवन मे सदैव साथ रखेंगे। यह राखी पोर्णिमा आप के जिवन मे एक युग सार्वीन हो यही प्रभु से प्रार्थना है, आप सभी को राखी पोर्णिमा के अवसर पर खुब खुब आर्शिवाद

आपका
बाबास्वामी
10/8/2014

ताक आज से "गुलता" की "राखी" बांधो लो।